Appointment

Date:- 13/05/2020

* नाटक के आवश्यक अंग

→ नाटक के निम्नलिखित अंग होते हैं-

1. मुखमुद्रा :- हमारी सम्पूर्ण भावाभिव्यक्ति का एक प्रमुख साधन हमारी मुखमुद्रा या भाव-भंगिमा है। हम बिना बोले कुछ अपना सिर नीचे, ऊपर बायें, दायें इधर-उधर घुमाकर ऊपर उठाकर, नीचे झुकाकर, अपनी गर्दन नीचे-ऊपर या दायें-बायें करके विभिन्न प्रकार के नेत्रगोलक पलक या भौहें चलाकर होंठों को आगे-पीछे फैलाकर या सिकोड़कर या होंठों को दाँतों के नीचे करके या दाँतों से काटकर, गाल फुलाकर या सिकोड़कर विभिन्न मुखमुद्राओं द्वारा स्नेह, क्रोध आदि अनेक प्रकार के भाव उत्पन्न करते हैं। यह भाव प्रदर्शन कभी संवादों के साथ होते हैं, तो कभी बगैर शब्दों के।

इस प्रकार गर्दन के ऊपर के विभिन्न भागों को भाव के अनुसार प्रदर्शित करने को ही भाव-भंगिमा या मुखमुद्रा कहते हैं।

कभी-कभी मुखमुद्रा के द्वारा भाव का ही नहीं, चरित्र का भी प्रदर्शन होता है जैसे एक भौंह उठाकर दूसरी को संकुचित करके कुटिलता, दोनों आँखों को कुछ बन्द करके गाल फुलाकर होंठ सिकोड़ने से क्रूर कार्य की भूमिका को, मुखमुद्रा के द्वारा आकर्षक, शरबती, मतवाले, कोपपूर्ण, वात्सल्यपूर्ण, आश्चर्यजनक नेत्रों का उत्साह, क्रोध, भय, घृणा, प्रेम आदि भावों का भली-भाँति प्रदर्शन किया जाता है।

Today's Priority